



ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 25 अंक: 63 बुलेटिन अवधि: 14-18 दिसम्बर 2016 दिन: मंगलवार दिनांक: 13 दिसम्बर, 2016

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	14-12-2016	15-12-2016	16-12-2016	17-12-2016	18-12-2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	23	24	24	24
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	09	09	08	08	08
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	50	50	50	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	10	12	10	08	08
वायु की दिशा	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (06 से 12 दिसम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में दिन में आसमान साफ रहा व सुबह घने बादल छाये रहे तथा 0.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 18.0 से 22.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 10.2 से 14.1 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 91 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 55 से 78 प्रतिशत एवं हवा 2.1 से 5.7 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व-दक्षिण-पूर्व व पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ जौ की पछेती दशा में बुवाई हेतु संस्तुत किस्में— ज्योति, प्रीति, मंजुला, जागृति का चुनाव करें। प्रति हैक्टेयर 100–110 कि०ग्रा० बीज का उपयोग करें। 18–20 से०मी० के कतारों में बुवाई करें। बुवाई दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।
- ❖ गेहूँ की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- ❖ गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- ❖ सरसों में माहू का प्रकोप हो तो 1.0 ली० मिथाईल-ओ-डेमिटान 25 ई०सी० को 800–1000 ली० पानी में घोलकर छिड़काव करें। छिड़काव 2.00 बजे के बाद करें ताकि मधुमक्खी पर इसका प्रभाव कम से कम हो।
- ❖ समय से बोए गए गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद आवश्यकतानुसार प्रथम सिंचाई करें। प्रथम सिंचाई के 3–4 दिन बाद जब खेत चलने लायक हो जाए तब बचे हुए नाइट्रोजन की आधी मात्रा का टॉपड्रेसिंग अपराहन में करना अधिक प्रभावी होता है।
- ❖ गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई-गुड़ाई बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45–50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही है साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते हैं।
- ❖ समय से बोए गई चनें की फसल में दो बार निराई-गुड़ाई करें। पहली बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी पहली सिंचाई के बाद बुवाई के 45–50 दिन बाद करें।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ आलू में पछेती झुलसा रोग हेतु मौसम अनुकूल है। तथा क्रांतिक स्तर को पार कर चुका है अतः किसान भाईयो को सलाह दी जाती है कि मैनकोजेब 2.5 ग्रा०/ली० दर से तुरंत छिड़काव करें। यह छिड़काव टमाटर की फसल पर भी करें।
- ❖ गोभी वर्गी फसलों में पत्ति धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/ली० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्त्रानिलिप्रोले 18.5 एस०सी०, 150मि०ली०/है० या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस०सी०, 500मि०ली०/है० की दर से प्रयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्त्रानिलिप्रोले 10.26 ओ०डी०, 900 मि०ली०/है० या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू०एस०जी०, 200 ग्राम/है० की दर से प्रयोग करें।
- ❖ मटर की बीज वाली फसल को चूर्णी फफूँदी एवं किट्ट रोग से बचाने हेतू डाई एथेनम 45 का 0.25 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस०जी० 200ग्रा०/है०, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि०ली०/है०, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी०एस० 300मि०ली०/है० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि०ली०/है० या फिप्रोनिल 5 एस०सी० 1लीटर/है० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू०पी० 600ग्रा०/है० या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि०ली०/है० की दर से छिड़काव करें।
- ❖ प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि०ली०/है० की दर से तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- ❖ धनिया की बुवाई करें। खेत में नमी न हो तो एक सिंचाई पलेवा के रूप में करें।
- ❖ पाला पड़ने की स्थिति में नए रोपित पौधों की सिंचाई करें।
- ❖ पपीता, आम एवं लीची के नये रोपित पौधों को पाले से बचाने हेतु सूखी घास-फूस एकत्रित कर लें ताकि इन पौधों को पाले से बचाने हेतु 15 दिसम्बर एवं उसके बाद कवर किया जा सके।
- ❖ करी कीट के नियंत्रण हेतु पालीथीन स्ट्रिप का प्रयोग करें ताकि इन कीटों को पौधों के ऊपर चढ़ने से रोका जा सके। इसके लिए 25 से 30 सेमी चौड़ी पालीथीन लेकर पौधों के मुख्य तना पर जमीन की सतह से लगभग 30–40 सेमी ऊपर पौधों के तनों के चारों ओर से लपेट दें। लपेटने के उपरान्त पालीथीन की निचली तथा ऊपरी सतह पर ग्रीस या खराब तेल का प्रयोग करते हुए पालीथीन के दोनों शिरों को रस्सी से बांध दें।
- ❖ यदि अब तक उर्वरक ना दिया गया हो तो संस्तुत मात्रा में उर्वरक डालें।

- ❖ फास्फेटिक एवं पोटेशिक उर्वरक का संस्तुत मात्रा का प्रयोग मुख्य तना से लगभग 2 मीटर की दूरी पर गोल नाली में प्रयोग करें।
- ❖ फल वृक्षों में मुख्य पोषक तत्व जैसे फॉस्फोरस और पोटेश के अलावा सूक्ष्म पोषक तत्वों का भी प्रयोग करें। इसके लिए पूर्ण रूप से विकसित 10 वर्ष के फल वृक्षों में 250 ग्राम बोरेक्स, जिंक सल्फेट एवं कॉपर सल्फेट का भी प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबंध:

- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। गाय-भैंस को शीतला रोग (रिंडर पेस्ट) का टीका लगवाए।
- ❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ-सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस-पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा दें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते हैं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा० आर० के० सिंह
 प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
 ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
 गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर